International Journal of Education and Science Research Review
Volume-11, Issue-5 Sep-oct-2024 E-ISSN 2348-6457
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Impact Factor - 7.02 Email- editor@ijesrr.org

पं. रघुनाथ प्रसाद चतुर्वेदीद्वारा रचित 'श्रीजवाहरज्योतिर्महाकाव्य'में प्रयुक्त अंगीरस और एकाधिक सहायक रसों का विवेचन

डॉ. विनीता शर्मा, अध्यक्षा, संस्कृत विभाग,

मोनाड विश्वविद्यालय हापुड़

पं. रघुनाथ प्रसाद चतुर्वेदीद्वारा रचित 'श्रीजवाहरज्योतिर्महाकाव्य'में प्रयुक्त अंगीरस और एकाधिक सहायक रसों का विवेचन करने से पहले रसशास्त्र में वर्णित रसनिष्पत्ति की प्रक्रिया और विभिन्न रसों के आस्वादन की प्रक्रिया का स्वरूपगत ज्ञान अनिवार्य है। धनन्जय ने अपने बहुचर्चित ग्रन्थ 'दसरूपक' के चतुर्थ प्रकाश में रस की निम्नलिखित परिभाषा दी है–

'विभावैरनुभावैश्च यात्विकैर्च्यभिचारिभिः

आनीयमानः स्वाद्यत्वं स्थायी भावो रसः स्मृतः'

विभाव, अनुभाव, सात्विक भाव और व्यभिचारी भावों के द्वारा आस्वादन के योग्य किया स्थायी भाव ही रस कहलाता है। (श्रव्य–काव्य) के श्रोताओं तथा (अभिनव के) दर्शकों के हृदय में विशेष रूप से विद्यमान रति आदि स्थायी भाव होता है, जिसका लक्षण आगे कहा जायेगा। वह स्थायी भाव आगे बतलाये गये स्वरूप वाले काव्य में वर्णित अथवा अभिनव द्वारा प्रदर्शित विभाव, अनुभाव, व्यभिचारी भाव और सात्विक भावों के द्वारा आस्वादन के योग्य अर्थात अत्यधिक आनन्दमय अनुभूति के रूप में कर दिया जाता है, रस कहलाता है। इस प्रकार सामाजिक (श्रोता तथा दर्शक) ही रसिक (रसयंक्त, रस का आस्वादन करने वाले) हैं। काव्य तो केवल उस प्रकार की आनन्दानुभूति के उद्बोधन का कारण होने से रसवत् (रसयुक्त, सरस काव्य इत्यादि) जिस प्रकार (लोक में) 'आयुर्धृतम' अत्यादि व्यवहार हुआ करता है।

दशरूपकार ने रस की उपर्युक्त परिभाषा में विभाव, अनुभाव और संचारी भाव द्वारा स्थायी भाव आस्वाद योग्य बन कर रसरूप में परिणत हो जाता है, यह मत व्यक्त किया है। सबसे पहले आचार्य भरतमुनि ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ नाट्यशास्त्र में रस–निष्पत्ति के सम्बन्ध में निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग किया है।

विभावानुभावसंचारी संयोगात् रस निष्पत्ति अर्थात विभाव, अनुभाव और संचारी भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है। आचार्य भरतमुनि के इस रससूत्र में स्थायी भाव का नाम प्रयुक्त नहीं हुआ है। अतः यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि विभाव अनुभाव और संचारी भाव का किसके साथ संयोग होता है और कौन रस रूप में परिणत होता है? आचार्य भरतमुनि के इस रससूत्र में प्रयुक्त संयोग और निष्पत्ति शब्द के अलग–अलग अर्थ निर्धारित किये और यह मत व्यक्त किया है कि विभाव, अनुभाव और संचारी भाव के सानिध्य से स्थायी भाव रस रूप में परिणत होता है। विभाव, अनुभाव और संचारी भाव रस–निष्पत्ति के निमित्त कारण हैं स्थायी भाव रस–निष्पत्ति का उपादान कारण है। विभाव, अनुभाव, और संचारी भाव आदि निमित्त कारणों से स्थायी भावरूपी उपादान कारण रसरूप में परिणत हो जाता है। रससूत्र के प्रथम व्याख्याता आचार्य भट्ट लोल्लट ने संयोग शब्द का अर्थ सम्बन्ध माना है और निष्पत्ति शब्द का अर्थ उत्पत्ति माना है। इन्होंने विभाव, अनुभाव और संचारी भाव को उत्पादक माना है और रस को उत्पाद्य माना है। इस प्रकार इन्होंने विभाव, अनुभाव और संचारी भाव और रस के बीच उत्पादक–उत्पाद्य सम्बन्ध माना है। इन्होंने रस

की स्थिति मूल ऐतिहासिक पात्र में मानी है। इनका रस–सिद्धान्त उत्पत्तिवाद कहलाता है आचार्य भरतमुनि के उपर्युक्त रससूत्र के दूसरे व्याख्याता आचार्य शकुंक माने गये हैं। इनके द्वारा प्रतिपादित रस–सिद्धान्त अनुमितिवाद माना गया है इन्होंने भरतमुनि के रससूत्र में प्रयुक्त संयोग शब्द का अर्थ अनुमान किया है। विभाव, अनुभाव और संचारी भाव को अनुमापक माना है और रस को अनुमाप्य माना है। चित्रतुरंग– न्याय से इन्होंने अपने मत की पुष्टि की है। इनके अनुसार भी रस का आविर्भाव मूल ऐतिहासिक पात्र में ही होता है। नट–नटी तथा सामाजिक में रस का आविर्भाव नहीं होता। इनका कहना है कि रस की उत्पत्ति नहीं होती, रस की अनुमिति होती है।

आचार्य भरतमुनि के रससूत्र के तीसरे व्याख्याता भट्ट नायक माने गये हैं। भट्ट नायक ने अपने रस–सम्बन्धी सिद्धान्त का नाम भुक्तिवाद रखा है। इन्होंने संयोग का अर्थ उपभोग और निष्पत्ति का अर्थ भोज्य माना है। इन्होंने विभाव, अनुभाव और संचारी भाव और रस के मध्य भोज्य–भोजक सम्बन्ध माना है। इन्होंने रसास्वादन की प्रक्रिया के तीन अंग माने हैं–

1. अविद्या–व्यापार
2. भाव–व्यापार या प्रक्रिया या भावकत्व
3. भोजकत्व

इनका मत है कि अमिद्या शब्द शक्ति द्वारा काव्य का अर्थ स्पष्ट होता है। भावन–प्रक्रिया द्वारा नाटक और महाकाव्य में प्रयुक्त असाधारण पात्र साधरण बन जाते हैं। भावन–प्रक्रिया को साधारणीकरण भी कहा गया है। भावन–प्रक्रिया द्वारा रस का उपभोग होता है। उपभोग को ही इन्होंने भुक्ति कहा है। रसक्षेत्र में भट्टनायक की सबसे बड़ी उपलब्धि साधारणीकरण की रही है। इन्होंने रस का आविर्भाव न तो मूल ऐतिहासिक पात्र में माना है और न ही नट–नटी में माना है।

इनके अनुसार रस का आविर्भाव सहृदय या सामाजिक में होता है। सामाजिक को प्रमाता भी कहा जाता है। पहली बार भट्टनायक ने रस का सम्बन्ध सहृदय सामाजिक से जोड़कर रस के क्षेत्र में एक क्रान्तिकारी कार्य किया। रससूत्र के अन्तिम व्याख्याता आचार्य अभिनव गुप्त माने जाते हैं। अभिनव गुप्त ने अपने रस–सिद्धान्त का नाम अभिव्यक्तिवाद रखा है। इन्होंने भट्ट नायक के द्वारा प्रतिपादित साधारणीकरण की प्रक्रिया को रस–निष्पत्ति का आधार माना है और रस को भुक्ति न मानकर अभिव्यज्जित माना है। इन्होंने भी रस का सम्बन्ध सहृदय पाठक से जोड़ा है। साधारणीकरण की प्रक्रिया का आविर्भाव हो जाने से अथीनयात्मक काव्य अर्थात नाटक के अर्न्तगत रस की व्यंजना को सर्वाधिक महत्व दिया गया। दृश्य काव्य के साथ–साथ श्रव्य और पाठ्य काव्य रचनाओं के सन्दर्भ में भी साधारणीकरण को रसास्वादन की प्रक्रिया माना गया।

आचार्य भरतमुनि के रससूत्र के चारों व्याख्याताओं के मतों का विवेचन करने के बाद संस्कृत काव्यशास्त्र के रसवादी और ध्वनिवादी आचार्यो ने रस को सर्वाधिक महत्व दिया। धनन्जय ने 'दसरूपक' में जो रस की परिभाषा दी है वह भरतमुनि के उपर्युक्त रससूत्र पर ही आधारित है। आचार्य भट्ट नायक और आचार्य अभिनव गुप्त के रसास्वादन–सम्बन्धी मतों से सम्बन्ध रखती है।

आचार्य भरतमुनि ने अपने प्रसिद्ध नाट्यशास्त्र में आठ रस माने हैं। नवें रस शान्तरस का संकेत अवश्य किया है। उपर्युक्त विभिन्न रसों में से संस्कृत भाषा में नाटकों और महाकाव्यों की रचना करने वाले

नाटककारों और कवियों ने श्रृंगार रस, वीररस, और शान्त रस इन तीनों रसों में से एक रस को अंगीरस के रूप में स्वीकार किया है।

1.1 अंगीरस और प्रयोग और अनुभूतिगत स्तर–

'आचार्य रघुनाथ प्रसाद' द्वारा रचित 'श्रीजवाहरज्योतिर्महाकाव्य' में प्रयुक्त अंगीरस का विवेचन करने से पहले काव्यरचना के सन्दर्भ में अंगीरस की अवधारणा और अंगीरस के विभिन्न प्रकारों का विवरण आवश्यक है। आचार्य अभिनव गुप्त ने 'अभिनव भारत' में शान्त रस को स्वतन्त्र रस के रूप में स्वीकार किया है। धनन्जय ने 'दसरूपक' में शान्त रस को स्वतन्त्र रस न मानते हुये भी इसके महत्व को अवश्य स्वीकार किया है। आचार्य मम्मट ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'काव्यप्रकाश' में शान्तरस को नवम् रस मानते हुये उसका निम्नलिखित लक्षण दिया है–

'निर्वेदस्थायिभावोऽस्ति शान्तोऽपि नवमो रसः'

भरतसूत्र में स्थायी भाव–निरूपण के पश्चात् निर्वेद इत्यादि व्यभिचारी भावों का निरूपण किया गया है। व्यभिचारी भावो में सर्वप्रथम 'निर्वेद' का उल्लेख करने का अभिप्राय यह है कि आचार्य भरत इसे स्थायी भावों में भी गिनना चाहते थे, अन्यथा 'निर्वेद' को सर्वप्रथम क्यों रखते, क्योंकि 'अपने आपको तुच्छ समझना' या 'विषयों से वैराग्य भाव' ही निर्वेद हैं और वह संसारी जीवन के लिये तो अमंङ्गल रूप ही हैं। 'अमंगल प्राय' में प्राय शब्द का प्रयोग इस हेतु किया गया है क्योंकि ईर्ष्यादि से उत्पन्न निर्वेद को अमंगल नहीं माना जाता।

शान्तरस का स्थायीभाव निर्वेद है। इसे 'शम' भी कहते हैं। शम या निर्वेद का अभिप्राय है 'वैराग्यदशा में आत्मरति से होने वाला आनन्द''शमो निरीहावस्थायामात्यविश्रामजं सुखम् (सा.द. 3.180) मिथ्यात्व रूप से भाव्यमान जगत ही शान्तरस का आलम्बन है, पवित्र, आश्रम, जीर्थ, महापुरूषसङ्ग् आदि इसके उद्दीपन हैं। रोमांच आदि अनुभाव है तथा स्मृति, मति जीवदया आदि इसके व्यभिचारी भाव है।

ऊपर शान्तरस को स्वतंत्र रस मानने के सम्बन्ध में अनेक आचायों के अलग–अलग मत दिये गये हैं। शान्तरस को काव्यरचना का अंगीरस मानने में भले ही विवाद हो परन्तु निराकार ईश्वर कर उपासना–सम्बन्धी काव्यकृतियों में देशभक्ति, विश्वशान्ति और मानव सेवा के सम्बन्ध में शान्तरस अंगीरस के रूप में आविर्भाव होता है। 'श्रीजवाहरज्योतिर्महाकाव्य' में महाकाव्य के नायक नेहरू के गुणों और कार्यो को व्यंजित करने वाला मूल या अंगीरस शान्तरस ही है। अंगीरस का सम्बन्ध महाकाव्य में वर्णित नायक की फलप्राप्ति से है। 'श्री जवाहरज्योतिर्महाकाव्य' में वर्णित नेहरू का मूल उद्देश्य विश्वशान्ति की स्थापना है।

देश से पराधीनता, हिंसा, हत्या, अपराध को दूर करके लोककल्याण और लोकानन्द की प्राप्ति ही इस महाकाव्य का प्रमुख उद्देश्य है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये नेहरू जीवनभर संघर्ष करते हैं और सम्पूर्ण विश्व को एकता के सूत्र में बाँधने का सतत् प्रयत्न करते हैं। उनके ये समस्त गुण और कार्य विश्वशान्ति का स्थापना में सहायक सिद्ध होते हैं।

इस विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि इस महाकाव्य में अंगीरस के रूप में शान्तरस का प्रयोग हुआ है। शान्तरस का सम्बन्ध वैराग्य या पलायन से नहीं है लोकनिष्ठा तथा कर्तव्यनिष्ठा से है। सत्य और ईमानदारी से लोककल्याण हेतु कर्तव्यपालन करना वैराग्य या पलायन नहीं है, आशा और विश्वास द्वारा अर्जित लोकयश का प्रतीक है। अतः शान्तरस का सम्बन्ध लोकयश से है। लोकयश से ही लोकानन्द

की प्राप्ति होती है। नायक का स्वयनन्द लोकानन्द बन जाये यही महाकाव्य–रचना का चरम लक्ष्य है। नेहरू के विश्व शान्ति विषयक प्रयास लोकयश–जन्य लोकानन्द के प्रेरक का सर्जक हैं। सम्पूर्ण महाकाव्य में नेहरू के मानवीय गुणों और विश्वशान्ति–सम्बन्धी कार्यो का वर्णन मिलता हैं। शैक्षिक, साहित्यिक, धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक कार्य विश्वशान्ति के आधार बनते हैं। रचनाकार ने अपपने महाकाव्य में नेहरू के मानवतावादी लोक हितैषी कार्यो का विस्तृत वर्णन किया है। वह दक्षिण अफ्रीका के आपदाग्रस्त भारतीयों की आर्थिक सहायता करते हैं। बिहार में आये भूकम्प से उत्पन्न प्राकृतिक आपदा से संत्रस्त जनता की अन्न, वस्त्र, और धन से सहायता करते हैंय किसानों को भूस्वामी बनाने के लिये संघर्ष करते हैं। श्रमिक संगठनों को प्रेरित और प्रोत्साहित करते हैं। दलित–संगठन को सुदृढ़ बनाने की शिक्षा देते हैं। देश को आर्थिक और औद्योगिक क्षेत्र में सम्पन्न बनाने का प्रयत्न करते हैं। विश्व के सभी देशों में विश्वशान्ति की स्थापना हेतु संघर्षशील रहते हैं। उनके ये सभी कार्य शान्तरस की आधारभूत परिलक्षित होते हैं।

नेहरू जी का ही सम्पूर्ण व्यक्तित्व सात्विक गुणों और लोकधर्मी कार्यो से निर्मित और विकसित हुआ। उनका सम्पूर्ण जीवन मानवसेवा, मानवमूल्यों की स्थापना और विश्वशान्ति के सतत् प्रयासों में व्यतीत हुआ। रचनाकार ने उनके इन गुण और कार्यो को विश्वसन्दर्भ में व्याख्यायित किया है। सामाजिक अशान्ति, विषमता, अन्याय, और शोषण की प्रक्रिया ने नेहरू के हृदय में करूणा, दया, ममता, अहिंसा, प्रेम और सदाचार आदि मानवीय भावों को आविर्भाव किया। अतः विश्वस्तरीय असमानता शान्तरस का आलम्बन रहा है। नेहरू आश्रय रहे हैं, अन्याय, अत्याचार, अनैतिक और अन्यायपूर्ण कार्य उद्दीपन के रूप में प्रयुक्त हुये हैं। नेहरू के हृदय में आविभूत करूणा, दया, सहानुभूति, सहनशीलता, अहिंसा, परोपकार के भाव अनुभाव के रूप में प्रयुक्त हुये हैं। उदारता, कर्मठता, और संघर्षशीलता, संचारी भावों के रूप में प्रयुक्त हुये हैं। इस प्रकार इस महाकाव्य में अंगीरस के रूप में शान्तरस का प्रयोग हुआ है। कवि ने निम्नलिखित छन्द में विश्व के सम्पूर्ण देशों को एकता के सूत्र में बाँधने का प्रयत्न किया है और यह इच्छा व्यक्त की है कि विश्व मानव शान्ति से जुड़कर ही पूरी तरह से सुखपूर्वक जीवनयापन कर सकता है। यथा–

'विश्व सर्वराष्ट्राणामेकं चेच्छाशनं भुवि

जीवेयः पूर्णसुखतस्तदा विश्वस्य मानवाः'11

काव्यरचना के निम्नलिखित छन्द में कवि ने विश्व का विनाश करने वाले अस्त्र–शस्त्रों का निर्माण इस विश्व में मानव को शान्ति प्रदान नहीं कर सकता है। अस्त्र–शस्त्र मानव जीवन के विनाश के कारण हैं सत्य, प्रेम, अहिंसा, और भाईचारे द्वारा ही विश्व में शान्ति की स्थापना हो सकती है, के भावों को स्पष्ट किया है। यथा–

'विनाशकारिणामस्त्रशस्त्राणां रचनोद्यतः

मानवौऽसौ न विश्वेऽस्मिन् शान्तिमिच्छति निश्चितम्।'

उपर्युक्त छन्द में अस्त्र–शस्त्र आलम्बन के रूप में प्रयेक्त हुये हैं। नेहरू आश्रय है। अस्त्र–शस्त्रों से उत्पन्न विनाश की कल्पना उद्दीपन के रूप में प्रयुक्त हुई है। इनमें नेहरू के मन में उत्पन्न अस्थिरता और पीड़ा अनुभाव के रूप में प्रयुक्त हुये हैं और अनके निर्माण और प्रयोग के आभाव में उत्पन्न हर्ष, उदारता, और व्यापकता संचारी भाव के रूप में प्रयुक्त हुये हैं और इन सभी से पुष्ट शम स्थायी भाव शान्तरस के रूप में परिणत हुआ है। कवि ने इस महाकाव्य के निम्नलिखित छन्द में नेहरू के समन्वयवादी भावों और विचारों को व्यक्त करते हुये कहा है–

यदि विश्व का समस्त मानव समुदाय अपने प्रयत्नों से एकसूत्र में बँध जाता है तब सुनिश्चित रूप से विश्व में शान्ति उत्पन्न हो सकती है। इस छन्द में लोककल्याण से उत्पन्न लोकानन्द की शान्तरस के रूप में अभिव्यक्ति हुई है। यथा–

'एकसूत्रे समस्तश्चेत् संसारोडस्य च मानवाः

स्वं बध्यनीयात् प्रयत्नेन् तदाशान्ति सुनियिचतता'।

कवि ने इस महाकाव्य के निम्नलिखित छन्द में नेहरू के रचनाधर्मी चिन्तनकी अभिव्यजना की है। इस छन्द में नेहरू ने कलह, विग्रह, हिंसा और प्रयोजन शून्य विषाद को विश्व में व्याप्त अशान्ति के मूल कारण माना है और उन्होंने इच्छा व्यक्त की है यदि विश्वमानव विश्वशान्ति के इन कारणों का परित्याग कर देता है तो निश्चित रूप से शाश्वत शान्ति प्राप्त कर सकता है। यथा–

'कलह विग्रहं हिंसा विषादं निष्प्रयोजनम्

चेत् त्यजेन्मालवो लोके तदा शान्ति सुनिश्चितता।'

रचनाकार ने महाकाव्य के निम्नलिखित छन्द में यह व्यक्त किया है कि नेहरू किस प्रकार पारिवारिक परिवेश से देश के नरम दल से जुड़े? मोतीलाल नेहरू के आवास पर सुयोग्य नेता यह विचार करने एकत्रित होते थे के किस प्रकार सत्य, प्रेम, और अहिंसा द्वारा देश को स्वाधीन कराया जाये। रक्त–पात किये बिना हिंसा के मार्ग पर चलकर देश को सम्पन्नता और स्थायी शान्त को जोड़ा जा सकता है। इन्हीं भावों और विचारों ने नेहरू को सबसे अधिक प्रभावित किया और इनके हृदय में विश्वशान्ति का बीज बोया। यथा–

'समीपे जनकस्य विचारार्थ समागतैः

प्रभावितोदलस्यायं विनम्रस्य सुनेतृभिः'

महाकाव्य के निम्नलिखित छन्द में कवि ने नेहरू के महाप्रयाग को दिव्यशक्ति से जोड़ा है। कवि ने निम्नलिखित उद्गारों द्वारा यह व्यंजित किया है देवताओं ने नेहरू को अपनी कार्यसिद्धि के लिये स्वर्ग से आहूत किया।

देवताओं के आह्वान से नेहरू जी इस लोक का परित्याग करके देवलोक चले गये। इस छन्द में कवि ने नेहरू के अलौकिक व्यक्तित्व को व्यंजित किया हैं और यह संकेत किया है कि दिव्य पुरूष नेहरू की इस लोक के साथ–साथ देवलोक में भी आवश्यकता थी। यथा–

'स्वकार्यसिद्धये देवैराहूतः श्रीजवीहरः

इयं लाकं परित्यज्य देवलाककमगाततः'

इस छन्द में कवि आश्रय है, नेहरू आलम्बन है, उनके दिव्यगुण और कार्य उद्दीपन है। कवि के हृदय में उत्पन्न अलौकिक भाव अपुभाव है। हर्ष और अकल्पित आनन्द संचारी है। आत्मानन्द का बोधक शमस्थायी भाव शान्तरस के रूप में व्यंजित हुआ है। महाकाव्य के निम्नलिखित छन्द में कवि ने नेहरू के महाप्रयाग के बाद उनके महापुरूषत्व और उनके जन्म से इस धरित्री और देशवासियों को धन्य माना है। इस छन्द में भावों की गहनता, विशदता, और विचारों की उदारता एवं उदात्तता को व्यंजित किया है। कवि ने यह स्पष्ट कर दिया है कि शान्तरस लोकानन्द की सृष्टि करता है। लाकसमाज को सम्पन्न, समृद्ध, और प्रगतिशील

जीवनमूल्यों से जोड़ता है। केवल संसार की अनित्यता और क्षणभंगुरता ही शान्तरस के प्रेरक तत्व नहीं है। अतः शान्तरस हृदय की संकीर्णता और विचारों की एकांगिता का ही बोधक नहीं है अपितु विश्वमानव की हृदयगत विशालता और मानसिक विस्तार का भी प्रेरक और पोषक है। अतः वैराग्यमूलक ही नहीं आाशा, विश्वास, और मानव–विकास का बोधक भी है। यथा–

'

श्री जवाहरलालोंऽयं महापुरूषतां गतः

तज्जन्मना धरित्रीयं धन्यतामाप देशजा।'

कवि ने अपने महाकाव्य में निम्नलिखित छन्द में नेहरू के वसीयत पत्र में व्यक्त अन्तिम अभिलाषा पूर्ति हेतु भस्म को कलश में रखकर गंगा नदी और भारत के सम्पूर्ण प्रदेशों में विकीर्ण करने का वर्णन किया है। नेहरू के देहावसान के तीसरे दिन उनके शरीर की भस्म को एकाधिक कलशों में संगृहित किया और भूति से युक्त उन सभी कलशों को प्रधानमन्त्री भवन में रख दिया गया। इसके पश्चात् कलशों में स्थित शरीर की भस्म को वायुयान मार्ग से सर्वत्र विकीर्ण कर दिया गया। रचनाकार ने इस छन्द में व्यंजित किया है कि अपने जीवनकाल में नेहरू विश्वशान्ति के कार्यो में सतत् रूप से संलग्न रहे। मृत्यु के बाद उनके शरीर की भस्म ने देश के कण–कण का संस्पर्श किया। कवि के इन उद्‌गारों में विश्वशान्ति के भाव निहित है। यथा–

'तृतीय दिवसे भस्म गृहीतं कलशेषु हि

प्रधानमन्त्रिभवने न्यस्तास्ते कलशास्ततः'

कवि ने अपने महाकाव्य के निम्नलिखित छन्द में महात्मा गांधी के स्वाधीनता प्रेम और उससे प्रेरित और प्रभावित नेहरू के मानवतावादी कार्यो की व्वंजना की है। नेहरू ने अपनी जीवन शैली और कार्य शैली को लाककल्याणमय बनाने की प्रेरणा महात्मा गांधी के सत्य, प्रेम, और अहिंसा पर आधारित स्वाधीनता आन्दोलन की संघर्षशील प्रक्रिया से ली। गांधी जी का संघर्ष भी विश्वशान्ति के लिये था। नेहरू ने भी महात्मा गांधी के कार्यक्षेत्र को विश्व में शान्ति स्थापना के लिये चुना। यथा–

'श्री जवाहरलालस्य जीवनं सक्रियं तथा

विचारैगान्धिनोडभ्येति देयास्वातन्त्र्यसागरम्'।

अन्य रसों का सहयोग–

'पं. रघुनाथ प्रसाद चतुर्वेदी' ने अनले प्रसिद्ध महाकाव्य 'श्री जवाहरज्योतिर्महाकाव्यम्' शीर्षक में महाकाव्य में प्रयुक्त अंगीरस शान्तरस को समृद्ध और पुष्ट करने हेतु प्रासंगिकरूप से अनेक सहायक रसों का प्रयोग किया है। इन सहायक रसों का स्वतन्त्र महत्व होते हुये भी महाकाव्य की रचना प्रक्रिया के सम्बन्ध में शान्तरस की व्यापकता और लोकप्रियता से जुड़ा हुआ है। यह पहले ही स्पष्ट कर दिया है कि इस महाकाव्य की रचना अभिनयात्मक संवादात्मक शैली में नहीं हुई है। रचनाकार ने सभी घटनाओं का स्वयं ही वर्णन किया है। कहीं–कहीं दो पात्रों के कथनों को भी अपनी शैली में व्यक्त किया है। अतः रस–निष्पत्ति के सन्दर्भ में साधारणीकरण की प्रक्रिया का सम्यक् निर्वाह नहीं हुआ है। रचनाकार ने नेहरू के जन्म–सम्बन्धी प्रसंगों में वात्सल्य रस का संकेत किया है। नेहरू जी की अध्ययन शैली के सन्दर्भ में उनकी अध्ययन–प्रियता,

पर्यटन–प्रियता, साहस, और स्वालम्बन की भावनाओं का भी संकेत किया है। राजनैतिक घटनाओं से सम्बद्ध होने पर नेहरूजी अंग्रेज शासकों के अमानवीय अत्याचारों का धैर्य, साहस, और वीरतापूर्ण मुकाबला करते हैं और कभी भी विचलित नहीं होते हैं। ब्रिटिश शासकों द्वारा देशवासियों पर किये जाने वाले अत्याचार उनको पीड़ा अवश्य पहुँचाते हैं लेकिन उनकी ऊर्जा और सक्रियता को किसी भी स्तर पर कम नहीं कर पाते। रचनाकार ने ब्रिटिश सैनिकों के अत्याचारों के संदर्भ में उनके अदम्य और अडिग साहस का परिचय देकर अनेक सन्दर्भ में वीररस की व्यंजना की है। अंग्रेज सैनिकों द्वारा लाठी प्रहार और स्वाधीनता सैनानियों का शारीरिक उत्पीड़न एक और रौद्र रस की व्यंजना करता है तो दूसरी ओर भयानक रस की भी दृष्टि करता है। ब्रिटिश सैनिकों का अमानवीय कृत्य और देशवासियों को प्रताड़ित करना भय की भी सृष्टि करता है। इस प्रकार रचनाकार ने इन्य अनेक रसों का प्रयोग करके अंगीरस को गहनता, निर्मलता, और गत्यात्मकता प्रदान की है। समस्त सहायक रसों का समुचित प्रयोग मूलरस के अंग के रूप में हुआ है। इन सभी रसों का रसशास्त्र की दृष्टि से ही महत्व नहीं है अपितु मानव–मनोविज्ञान की दृष्टि से भी महत्व है। कवि ने समस्त सहायक रसों की अभिव्यंजना मानव अनुभूतियों के बहुस्तरीय रूपों को स्पष्ट करने के लिये भी की है। मानव जीवन में हर्ष, विषाद, पीड़ा, क्रोध, भय, आनन्द, शान्ति सभी मनोभावों का महत्व है। इस महाकाव्य की रचना में इन सभी मनोभावों पर आधारित सहायक रसों का स्वतन्त्र और सापेक्षिक रूप में प्रयोग हुआ है। कवि ने अपने महाकाव्य में वर्णित निम्नलिखित छन्द में बहिष्कार आन्दोलन के सन्दर्भ में तिलक, लोकमान्य और अरविन्द की वीरभावना को व्यक्त किया है। तीनों ही महापुरूष विदेशी–वस्तुओं का साहस और शोर्य के साथ बहिष्कार करते हैं। यथा–

'तिलको लोकमान्यः सोऽरविन्दो योगिनां वरः

उभौ देशस्य नेतारौ वहिष्कारार्थमुद्यतौ'।

उपर्युक्त छन्द में लोकमान्य तिलक और अरविन्द के वीरतापूर्ण कार्यो द्वारा वीररस की व्यंजना की है।

महाकाव्य के निम्नलिखित छन्द में कवि ने नेहरू के अदम्य साहस और वीरतापूर्वक कार्य का वर्णन किया है। नेहरू ब्रिटिश सैनिकों के प्रहार का हिंसा से प्रतिकार नहीं करते हैं अपितु मन और विचारों को पवित्र बनानेवाले उपवास से करते हैं। नेहरू ने ब्रिटिश सैनिकों के प्रहार का प्रतिशोध करने के लिए तीन दिन उपवास व्रत का अनुष्ठान किया। कवि ने मन और वाणी की पवित्रता और प्रखरता को वीरभावना का प्रेरक माना है। अतः इस छन्द में वीररस का प्रयोग माना जायेगा। यथा–

'तत्प्रहारविरोधाय तदैव त्रिदिनात्मकः

श्री जवाहरलालेन चौपवासः भवत'

जवाहर लाल नेहरू ने महात्मा गांधी के असहयोग आन्दोलन और सत्याग्रह आन्दोलन से सक्रिय रूप से जुड़कर अंग्रेज शासकों की दमनदारी नीतियों का अहिंसात्मक रूप से विरोध किया।

नेहरू ने यह अनुभव किया कि असहयोग आन्दोलन और सत्याग्रह आन्दोलन दोनों ही देशवासियों के समस्त कार्यो को रूद्ध कर देते हैं। इससे देश की प्रगति भी बाधित होती हैं परन्तु अंग्रेजों की दमनदारी नीतियों का विरोध हिंसा द्वारा सम्भव नहीं है। इन दोनों छन्दों में व्यक्त नेहरू के विचार क्रान्तिकारी और विद्राही होने के कारण वीररस की सृष्टि में सहायक है। यथा–

'आन्दोलनं विरोधस्य तथैत राजनैतिकम्

उभे अप्येकमार्गे ते अयातांच दिवानिशमः'

'सत्याग्रहस्य प्रारम्भे गतिरोधेऽभवच्च यः

तेन सर्वाणि कार्याणि निरूद्धान्यत्र भारते'

नेहरू ने ब्रिटिश शासकों की मानव–विरोधी नीतियों का साहस, शौर्य और स्वावलम्बन के साथ विरोध किया। अंग्रेज शासकों के प्रतिबन्ध के रहते हुये भी नेहरूजी ने मालवीय के साथ कुम्भ के अवसर पर गंगा में स्नान किया इसके साथ ही साथ 'साइमन कमीशन' की राष्ट्रविरोधी नीतियों का भी साहस और शौर्य के साथ विरोध किया। कवि ने नेहरू के समस्त कार्यो द्वारा वीररस व्यंजना की है। यथा–

'स्नानं त्रिवेण्यां हि विरोधमूलं कुशासकैः संर्घभूतीदानीम

तद्युक्तवार्ता त्वमोदिताऽभूत श्री मालवीयस्य महात्मनाहि।

'नियुक्तिसमितिः काचित् 'साइमन' भिधानिका

देशे समागता यस्या विरोधः परितः कृतः'।

कवि ने इस महाकाव्य में निम्नलिखित छन्दों में रौद्र और भयानक रसों की व्यंजना की है। अंग्रेज सैनिक हृदयहीन पशुओं की तरह आचरण करते थे। पुरूष प्रताड़ना के साथ–

साथ नारी प्रताड़ना भी उनके विनाश कार्यो में सम्मिलित थे। अंग्रेज सैनिकों ने गुणवती वृद्धा नेहरू जी की माताजी स्वरूप रानी के सिर पर दण्ड प्रहार किया। इससे उनका सिर विदीर्ण हुआ।

अंग्रेज पशु शासकों ने पंजाब प्रान्त में अहिंसात्मक आन्दोलन चलाने वाले लाला लाजपतराय को भी दण्डों के प्रहार से प्रताड़ित करके घायल कर दिया। स्वरूप रानी और लाला लाजपतराय दोनों के दण्डप्रहारों से घायल होने के साथ–साथ ब्रिटिश सैनिकों के अमानवीय हृदयहीन हिंसक कार्यो से गोविन्दवल्लभ पन्त और जवाहर लाल नेहरू दोनों भी ताड़ित और आहत हुये। उपर्युक्त छन्दों में स्वरूप रानी, लाला लाजपतराय, पं0 गोविन्दवल्लभ पन्त, पं0 जवाहर लाल नेहरू आश्रय के रूप में प्रयुक्त हुये हैं, ब्रिटिश सैनिक आलम्बन के रूप में प्रयुक्त हुये हैं। ब्रिटिश सैनिकों द्वारा किया गया दण्ड प्रहार उद्दीपन के रूप में प्रयुक्त हुआ है। सभी आश्रयों का आक्रोश, क्रोध और आशंका–जन्य भय रौद्र और भयानक रस के रूप में परिणत हुये हैं। इन दण्डप्रहारों से भारत की जनता में अप्रत्याशित भय का आविर्भाव हुआ। कवि ने लोकमनोभावों की सम्यक व्यंजना की है। यथा–

'श्री जवाहरलालस्य वृद्धा माता गुणान्विता

सैनिकैदण्डहस्तैस्तै भ्रंश शिरसि ताड़िता

लाला लाजपताख्योऽयं प्रान्ते पंचनदे तदा

दण्डे प्रताडितश्चासीतदा स पशुशासकैः

गोविन्दवल्लभ पन्तः पतितैस्तैश्चः शासकैः

श्रीजवाहरतत्र दण्डेः सुभ्रंशमाहतः'

कवि ने इस महाकाव्य में जवीहर लाल के ज्नम द्वारा यह व्यंजिक किया है कि उनका जन्म पवित्र भाव सम्पन्न कर्मयोग–जन्य कर्मयोगी के रूप में हुआ। एक योगी के रूप में नेहरू का अवतरित होताअद्भुत रस का बोधक विस्मय स्थायी भाव को जन्म देता है। उन्होंने कर्म योगी के रूप में अवतरितहोकर देशवासियों को आश्चर्य से युक्त करने के साथ–साथ गौरवान्वित भी किया। यथा–

'शुचिनः श्रीमत् कर्मयोग संवलितस्य च

मोतीलाल गृहे ह्मसीत कर्मयोगी जवाहरः'

रस का संन्दर्भ अनुभूतियों के प्रयोग से है। रसशास्त्रियों का कहना है कि रस की अनुभूति होती है। अनुभवगम्य होने के कारण ही रस को ब्रहमानन्द सहोदर कहा गया है। आश्रय और आलम्बन की तादात्मय से रस का आस्वादन होता है। अतः प्रमाता रस का उसी प्रकार वर्णन नहीं कर पाता जिस प्रकार साधक या भक्त भगवान के सानिध्य से प्राप्त आनन्द का अनुभव नहीं कर सकता। जैसे ब्रहमानन्द अनुभूति का विषय है ठीक उसी प्रकार काव्यानन्द भी अनुभव का विषय है। वह वर्णनानीत है। रसास्वादन की प्रक्रिया में संस्कृत रसशास्त्रियों ने साधारणीकरण की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका मानी है। रचनाकार काव्य में वर्णित असाधारण पात्रों को साधारण की प्रक्रिया द्वारा काल और क्षेत्र के बन्धनों से मुक्त करके सामान्य पात्र बना देता है। काव्यगत विशिष्ट पात्रों के गुण और कार्य सामान्य मानव के गुण और कार्य बन जाते हैं। यह सामान्यीकरण की प्रक्रिया ही रसास्वादन की आधारभूमि है। रसास्वादन के लिये अथवा रस की अभिव्यक्ति के लिये आश्रय और आलम्बन दोनों का होना अनिवार्य है। इन दोनों का एकीकरण ही काव्यानन्द की सृष्टि करता है। रचनाकार और रचनागत पात्रों का मानसिक स्तर और सहृदय पाठक अथवा दर्शक का मासंसिक स्तर शत प्रतिशत समान नहीं होता। उसमें रचनागत और प्रयोगगत अन्तर परिलक्षित होता है। यह अन्तर अनुभवतिगत स्तरभेदों को द्योतित करता है।

1.2 रसशास्त्रियों ने रस के चार अवयव माने हैं–

- स्थायी भाव
- विभाव
- अनुभाव
- संचारी भाव।

ये चारों ही अनुभूतिगत स्तरभेदों के परिचायक है। काव्य में वर्णित आलम्बन आश्रय के हृदय में स्थित स्थायी भाव को जताता है। आलम्बन की चेष्टायें और प्राकृतिक परिवेश उद्दीपन का कार्य करते हैं। आश्रय की चेष्टायें अनुभाव कहलाती है। हर्ष, उल्लास, उन्माद आदि संचारी भाव गये हैं। विभाव, अनुभाव, और संचारी भाव के सानिध्य से स्थायी भाव रस रूप में परिणत होता है। रसानुभूति के समस्त अवयव समन्वय की प्रक्रिया काव्यानन्द को आविर्भाव करते हैं। जब रस के समस्त अवयव अपना वैशिष्ट्य् छोड़कर एकीकृत होकर रसानुभमति के प्रयोगस्तरों को एकीकृत करते हैं तभी अखण्ड आनन्द की सृष्टि होती है। इस विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि रसानुभमति के प्रयोग स्तर बहुआयामी और बहुरूपा है। रस का गहरा सम्बन्ध

मानव मनोविज्ञान से है। मानव मनोविज्ञान द्वारा ही आनन्द और शान्ति की सृष्टि करती है। अनुभूतिगत एकाग्रता अथवा एकनिष्ठता ही काव्यानन्द की सृष्टि करती है।

1.3 निष्कर्ष

पं. रघुनाथ प्रसाद चतुर्वेदी द्वारा रचित श्री जवाहर ज्योतिर्महाकाव्यम् अनुभूतिगत वैविध्य का अक्षयकोष है। बहुस्तरीय अनुभूतियों की प्रयोगशाला है। राष्ट्र चिन्तन और विश्वशान्ति की संकल्पना और इनके कार्यान्वयन की प्रक्रिया इस महाकाव्य में प्रकार्यशील परिलक्षित होती है। नेहरू विश्वशान्ति का स्थापना के सन्दर्भ में वैचारिक स्तर पर ही संघर्षशील परिलक्षित नहीं होते हैं अपितु अनुभूतियों के स्तर पर भी संक्रमित और आन्दोलित परिलक्षित होते हैं। अनुभूतिगत विविधता और विचारगत अनेकरूपता नेहरू के व्यक्तित्व को लोकमय बनाते हैं। उनकी वैचारिक अन्विति भावगत प्रयोगस्तरों से अनुशासित परिलक्षित होती है। भले ही यह महाकाव्य संवादात्मक शैली में नहीं रचा गया है परन्तु रसानुभूति की प्रक्रिया सम्पूर्ण महाकाव्य में आद्यन्त प्रभावी परिलक्षित होती है। कहीं–कहीं वीर, रौद्र, और भयानक आदि रसों की अनुभमतिगत स्तरबद्धता पार्थक्यमूलक आभासित होते हुये भी रसानुभूति में अथवा रसास्वादन में सहायक सिद्ध होती है।

ग्रन्थ–सूची

- विश्वनाथ, (2000) 'साहित्यदर्पण', डॉ. सप्तव्रतसिंह, चौखम्बाविद्याभवन, वाराणसी, दशमसंस्करण.
- दण्डी, विश्वनाथ'(2000) 'डॉ. सप्तव्रतसिंह', चौखम्बाविद्याभवन, वाराणसी, दशमसंस्करण.
- बाग्भट्ट, (1938) 'काव्यानुशासन'सम्पा. रसिकलालसी. परिखश्रीमहावीरजैन, विद्यालय, बम्बईप्रथमवृत्ति
- व्यास, डॉ. भोलाशंकरव्यास(2025वि.)'संस्कृतकविदर्शन'चौखम्बाविद्याभवन, वाराणसी–1, तृतीयसंस्करण
- उपाध्याय, आचार्यबलदेव(1963) 'संस्कृतकविचर्चा'चौखम्बाविद्याभवन, वाराणसी–1
- जकारिया, आर.(1960) 'जवाहरलालनेहरूआत्मकथा'पब्लिशिंगहाऊस, जवाहरनगर, दिल्ली
- गेचीऐलनएण्डअलविन,(1960) 'नेहरूमोतीलालऔरजवाहरलाल'पब्लिशिंगहाऊस, दिल्ली
- नेहरू, जवाहरलाल(1949) 'ओटोग्राफी– भारतमेंआधुनिकघटनायें'चौखम्बा, विद्याभवन, वाराणसी
- निर्मलकर,डा० स्नेहलता कौस्तुभ पांडेय, 'आधुनिक परिप्रेक्ष्य का अध्ययन' हिन्दी साहित्य निवेफतन, 16, साहित्य विहार,बिजनौर (उ०प्र०)

- बडत्या, सूरज प्रकाश 'प्राचीन एवं आधुनिक गैरवैदिक चिन्तन पद्धतिः एक विश्लेषण,हिन्दी साहित्य निवेफतन, 16, साहित्य विहार,बिजनौर (उ०प्र०)
- निरंजन' भगवान सह 'जो या देहि रहित है, सो है रमिता राम' हिन्दी साहित्य निवेफतन, 16, साहित्य विहार,बिजनौर (उ०प्र०)
- राजेश्री, 'भारत में भाषायी समन्वयन वेफ निहितार्थ एवं लोकतांत्रिक संभावनाएँ'हिन्दी साहित्य निवेफतन, 16, साहित्य विहार,बिजनौर (उ०प्र०)
- पंकज कुमार, मधुकर सह की कहानीरू समकालीन संदर्भ' हिन्दी साहित्य निवेफतन, साहित्य विहार,बिजनौर (उ०प्र०)
- द्विवेदी, हजारीप्रसाद (1999) 'कबीर'राजकमलप्रकाशन, नईदिल्ली, 7 आवृत्ति
- द्विवेदी, हजारीप्रसाद(1991) 'हिन्दीसाहित्यकीभूमिका' राजकमलप्रकाशन, दिल्ली, संस्करण
- डा०नगेंद्र(2012) 'हिन्दीसाहित्यकाइतिहास' मयूरपेपरबैक्स, दिल्ली, संस्करण
- कश्यप, सुभाष (2016) 'संवैधानिक राजनितिक व्यवस्था' नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली
- कश्यप' सुभाष (2012) 'हमारा संविधान' नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली